Roll No. ..... Total Pages: 04

5124

M.A. (FINAL) EXAMINATION, 2019

HINDI

Paper – IV

निबन्ध एवं अन्य विधाएँ

Time: Three Hours

Maximum Marks: 100

PART – A (खण्ड – अ) *[Marks: 20]*

Answer all questions (50 words each).

All questions carry equal marks.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 50 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART – B (खण्ड – ब) *[Marks: 50]*

Answer five questions (250 words each).

Selecting one from each unit. All questions carry equal marks.

*प्रत्येक इकाई से **एक–एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल पाँच प्रश्न कीजिए।*

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART – C (खण्ड – स) *[Marks: 30]*

Answer any two questions (300 words each).

All questions carry equal marks.

*कोई **दो प्रश्न** कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।*

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड – अ

प्र.1 सभी प्रश्न अनिवार्य हैं –

(i) 'चिंतामणि' में किस निबंधकार के निबंध संग्रहीत हैं?

(ii) छंद को 'आवेग का वाहन' किसने बताया है?

(iii) 'भक्तिन' संस्मरण में पात्र भक्तिन का मूल नाम क्या है?

(iv) महादेवी जी अपने अतीत की चित्रशाला में सुभद्रा जी को किस रूप में रखती हैं?

(v) 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' शीर्षक में मुकुट किसका प्रतीक है?

(vi) 'कोल' अथवा 'निषाद संस्कृति' का परिचय किस निबंध में मिलता है?

(vii) हरिशंकर परसाई के किस निबंध में देश की उच्च शिक्षा में गिरते नैतिक–बोध को व्यक्त किया गया है?

(viii) 'निंदारस' निबंध में परसाई जी द्वारा वर्णित निंदकों की – श्रेणी को स्पष्ट कीजिए।

(ix) आत्मकथा 'जूठन' में किस समाज की धार्मिक आस्थाओं का सविस्तार वर्णन है?

(x) 'जूठन' आत्मकथा के लेखक का नाम लिखते हुए, इनकी अन्य महत्वपूर्ण रचनाओं का नाम लिखिए।

खण्ड – ब

इकाई – I

प्र.2 सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

''संयम बड़ी वस्तु है, तपस्या बड़ी वस्तु है। क्षणिक आवेग, सामयिक उन्माद, अधीर निवेदन तब तक भारतीय कवि के चित्त को मुग्ध नहीं करते, जब तक वे संयम, तप और भक्ति में स्नान करके पवित्र न हो गए हों। दुष्यंत और शकुंतला का प्रथम मिलन केवल खण्ड सत्य था। कवि ने उस–अभिशप्त प्रीति को विजयी नहीं होने दिया है। विजयी हुआ है वह प्रेम, जो जीवन रस में पूरी तरह परिपक्व होकर निकलता है।''

अथवा

प्र.3 'निबंधमणि' में संकलित निबंधों के आधार पर डॉ. नगेन्द्र की निबंध शैली की विशेषताएँ बताइए।

इकाई – II

प्र.4 सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

''महात्मा गाँधी जैसे सार्वभौम व्यक्तित्व का अभिनंदन उनकी पार्थिव मूर्त्ति प्रतिष्ठा में नहीं, मनुष्य के हृदय में सत्य प्रतिष्ठा में है। आलोक में कोई प्रतिमा गढ़ी नहीं जाती, क्योंकि वह हमारी दृष्टि में स्थित रहता है। हवा की प्राण प्रतिष्ठा किसी मंदिर में नहीं की जाती, क्योंकि उसे हम अपने प्राणों में लिए घूमते हैं।''

अथवा

प्र.5 'पर्वतपुत्र' संस्मरण की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

इकाई – III

प्र.6 सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

''मूर्ति को परोक्ष का प्रतीक या माध्यम मानने वाला धर्म, प्रत्यक्ष को परोक्ष का द्वार मानने वाला देश मूर्ति–मोह का शिकार हो गया, प्रत्यक्ष–पूजा का आराधक हो गया। श्रीकृष्ण और श्रीराम के ऐतिहासिक चरित परिमापित किए जाने लगे, नित्य लीला के असली और जन–जन में अभिव्याप्त उद्देश्य को भूलकर ऐतिहासिक लक्ष्य सिद्धियों में हम भटकने लगे। ईसा मसीह ने इतिहास का एक लक्ष्य पूरा किया तो श्रीराम और श्रीकृष्ण ईसा मसीह के आगे छोटे पड़ जायेंगे, इस भय से हमारी हिन्दू दृष्टि में ऐसा विपर्याय आ गया कि तत्काल एक दरार पड़ी।''

अथवा

प्र.7 'स्वाधीनता युग के कटघरे में हिन्दी' शीर्षक निबंध में हिन्दी के प्रति फिराक गोरखपुरी के दृष्टिकोण का प्रतिपादन कीजिए।

इकाई – IV

प्र.8 सप्रसंग व्याख्या कीजिए :–

''मौसम की मेहरबानी पर भरोसा करेंगे, तो शीत से निपटते–निपटते लू तंग करने लगेगी। मौसम के इंतजार से कुछ – नहीं होगा। वसंत अपने आप नहीं आता, उसे लाया जाता है। सहज आने वाला तो पतझड़ होता है, वसंत नहीं। अपने आप तो पत्ते झड़ते हैं। नए पत्ते तो वृक्ष का प्राण–रस पीकर पैदा होते हैं। वसंत यों नहीं आता। शीत और गरमी के बीच से जो जितना वसंत निकाल सकें, निकाल लें। दो पाटों के बीच में फँसा है, देश का वसंत। पाट और आगे खिसक रहे हैं। वसंत को बचाना है तो जोर लगाकर इन दोनों पाटों को पीछे ढकेलो–इधर शीत को, उधर गरमी को। तब बीच में से निकलेगा हमारा घायल वसंत।''

अथवा

प्र.9 'वैष्णव की फिसलन' या 'दो नाक वाले लोग' व्यंग्य आलेख में निहित व्यंग्य भाव को स्पष्ट कीजिए।

इकाई – V

प्र.10 सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

''उनकी दहाड़ सुनकर मैं थर – थर काँपने लगा था। एक त्यागी लड़के ने चिल्लाकर कहा – ''मास्साब, वो बैठा है कोणे में।'' हेड मास्टर ने लपक कर मेरी गर्दन दबोच ली थी। उनकी उंगलियों का दबाव मेरी गर्दन पर बढ़ रहा था। जैसे कोई भेड़िया, बकरी के बच्चे को दबोच कर उठा लेता है। कक्षा से बाहर खींचकर उसने मुझे बरामदे में ला पटका। चीखकर बोले – ''जा लगा पूरे मैदान में झाड़ू.....नहीं तो गांड में मिर्ची डाल के स्कूल से बाहर काढ़ (निकाल) दूँगा।''

भयभीत होकर मैंने तीन दिन पुरानी वही शीशम की झाड़ू उठा ली। मेरी तरह ही उसके पत्ते सूखकर झरने लगे थे। सिर्फ बची थी पतली–पतली टहनियाँ। मेरी आँखों से आँसू बहने लगे थे। रोते–रोते मैदान में झाड़ू लगाने लगा। स्कूल के कमरों की खिड़की, दरवाजों से मास्टरों और लड़कों की आँखे छिपकर तमाशा देख रही थी। मेरा रोम–रोम यातना की गहरी खाई में लगातार गिर रहा था।''

अथवा

प्र.11 'जूठन' आत्मकथा की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड – स

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

प्र.12 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' के सम्बन्ध में शुक्लजी के मत की समीक्षा कीजिए।

प्र.13 हिन्दी में संस्मरण तथा रेखाचित्र साहित्य के विकास में महादेवी वर्मा के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

प्र.14 ललित निबंध के तत्वों की पहचान करते हुए हिन्दी ललित निबंध को पं. विद्यानिवास मिश्र का योगदान पर प्रकाश डालिए।

प्र.15 'मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ' में संकलित रचनाओं के आधार पर परसाई जी की व्यंग्य शैली की विशेषताओं को उजागर कीजिए।

प्र.16 '' 'जूठन' हिन्दी ही नहीं, बल्कि समूचे भारतीय साहित्य की आत्मकथाओं के बीच दहकता दस्तावेज़ है।'' कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए।